अकबर महान

भाग १

राजनीतिक इतिहास

Manohar Memorial College
LIBRARY
Accession No. 1009
Classification
FATEH BAD (HISAR)

प्रकाशक :

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी

आगरा-३

954.023

विषय-सूची

अध्याय पृष्ठ

१. **जन्म, पालन-पोषण और प्रारम्भिक जीवन** १–१८

कुल और जन्म (१५ अक्तूबर, १५४२ ई०), १; अकबर असकरी के संरक्षण में, ६; बन्दी अकबर, ७; अकबर की मुसलमानी, १०; पुनः बन्दी जीवन में, १०; अकबर की प्रारम्भिक शिक्षा, १२; तीसरी बार फिर बन्दी, १३; अकबर की प्रारम्भिक नियुक्तियाँ, १४।

२. **चार वर्ष का संरक्षित शासन (१५५६–६० ई०)** १९–३९

अकबर का राज्याभिषेक, १९; मुग़ल साम्राज्य १५५६ ई० में, २०; शाह अबुल माली की क़ैद, २१; प्रारम्भिक कार्य, मुग़ल विरोधी विद्रोह, २२; सुलेमान का काबुल पर आक्रमण, २३; दिल्ली और आगरा की हेमू द्वारा विजय, २४; हेमू का सम्राट बनना और अकबर की संघर्ष की तैयारियाँ, २५; पानीपत का द्वितीय युद्ध (५ नवम्बर, १५५६ ई०) और हेमू का अन्त, २६; दिल्ली और आगरा की पुनः प्राप्ति, ३०; सिकन्दर सूर का अन्त (मई १५५७ ई०), ३०; अकबर का विवाह और १५५७ ई० की अन्य घटनाएँ, ३३; कन्धार का सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा को दिया जाना, ३५; जौनपुर के एक विद्रोह का दमन, ३६; अकबर की बाल्यावस्था में शासन-व्यवस्था, ३६; अकबर आगरे में और भदौरियों का पतन, ३७।

३. **बैरामखाँ का पदत्याग और उसके उत्तराधिकारी** ४०–५३

मतभेद के कारण, ४०; बैरामखाँ के विरुद्ध एक षड्यन्त्र, ४३; बैरामखाँ का पदच्युत किया जाना और अकबर का भेंट न करना, ४४; बैरामखाँ का अधीनता स्वीकार करने का निश्चय, ४६; ढुलमुल विद्रोही बैरामखाँ और उसकी पराजय, ४७; बैरामखाँ की अधीनता और क्षमादान, ४८; बैरामखाँ का बध, ४९; बैरामखाँ—एक मूल्यांकन, ४९;

अध्याय पृष्ठ

अकबर की आगरा वापसी, ५०; माहम अनगा और शिहाबुद्दीन का संयुक्त प्रधानमन्त्रित्व, ५१; बहादुरखाँ उज़बेक प्रधान मन्त्री, ५१; मुनीमखाँ की प्रधानमन्त्री पद पर नियुक्ति, ५२।

४. **हरम के प्रभाव से मुक्ति** ५४–७१

मालवा की विजय, ५४; जौनपुर पर विफल अफ़ग़ान आक्रमण, १५६१ ई०, ५६; मालवा में अकबर, ५७; एक रात्रि का साहसिक कार्य, ५८; खानेज़मा के विरुद्ध अकबर का अभियान, ५९; अतकाखाँ की प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्ति, ६०; चुनारगढ़ पर अधिकार, ६०; अकबर का स्वयं हाथियों का युद्ध कराना, ६०; आधमखाँ का बुलाया जाना, ६१; अकबर की प्रथम अजमेर यात्रा और आमेर की राजकुमारी से विवाह, ६१; मेड़ता की विजय (फरवरी-मार्च, १५६२ ई०), ६३; अकबर में आन्तरिक परिवर्तन—युद्ध क़ैदियों की दास प्रथा का अन्त, ६४; पारोंख का अभियान, ६६; पीरमुहम्मद का खानदेश पर आक्रमण और उसकी मृत्यु, ६७; नन्दुन के राजा गणेश की अधीनता स्वीकार करना, ६८; अतकाखाँ का बध—आधमखाँ का अन्त, ६८; माहम अनगा की मृत्यु, ७०; १५६० ई० के पश्चात स्त्री-शासन नहीं था, ७१।

५. **उदार लोकनीति का प्रारम्भ : १५६२–६४ ई० की घटनाएँ** ७२–८४

ऐतियादखाँ की शाही प्रदेशों के दीवान पद पर नियुक्ति, ७२; मुनीमखाँ फिर प्रधानमन्त्री, ७३; तानसेन का दरबार में आना, ७३; भथा की विजय, ७४; काबुल में कुशासन, मुनीमखाँ की असफलता ७४; यात्रा-कर का अन्त, ७५; गक्खर प्रदेश की विजय, ७६; मिर्ज़ा शर्फ़ुद्दीन का विद्रोह, ७७; जोधपुर की विजय, ७७; मुजफ्फरखाँ तुरबाती वित्त-मन्त्री नियुक्त, ७८; अबुल माली का विद्रोह, ७८; अकबर के जीवन पर आक्रमण, ७९; जज़िया का अन्त, ८०; ख्वाजा मुअज्जम को दण्ड, ८२; काबुल की स्थिति, अबुलमाली का अन्त, ८३।

६. **गोंडवाना विजय : उज़बेकों का अन्त (१५६४–६७ ई०)** ८५–१०८

गोंडवाना १५६४ ई० के पूर्व, ८५; राज्यवंश, ८५; रानी

अध्याय पृष्ठ

दुर्गावती की योग्यता और चरित्र, ८६; आसफखाँ का गोंडवाना पर आक्रमण, ८७; नरही का युद्ध, दुर्गावती का वीरतापूर्ण सामना, ८८; चौरागढ़ का युद्ध, गोंडवाना का विलीनीकरण, ९०; खानेज़मा की अफगानों पर तृतीय विजय, ९१; अबदुल्लाखाँ उज़बेक का विद्रोह, ९१; अकबर का खानदेश की राजकुमारी से विवाह, ९३; जुड़वाँ पुत्रों का जन्म, ९३; नगरचैन की नींव डालना, ९३; मिर्ज़ा सुलेमान का काबुल पर तृतीय विफल आक्रमण, ९४; रोहतास को दूत भेजना, ९५; आगरे के किले का निर्माण, ९५; शेख अब्दुलनबी का मुख्य सद्र नियुक्त किया जाना, ९६; उज़बेक विद्रोह, ९७; आगरे में अकबर, नये प्रशासकीय अधिनियम, १०१; मिर्ज़ा हकीम का पंजाब पर आक्रमण, १०२; मिर्ज़ाओं का विद्रोह, १०३; कमरगा शिकार, १०४; संन्यासियों से मुठभेड़, उज़बेकों का दमन, १०४।

७. **राजस्थान की विजय** १०९–१२७

राजस्थान में प्रथम प्रवेश, १०९; राणा से विरोध, ११०; चित्तौड़ पर आक्रमण, ११०; मिर्ज़ाओं के विद्रोह का दमन, १११; अकबर चित्तौड़ में, १११; चित्तौड़ का घेरा, ११३; अन्तिम चरण : चित्तौड़ का पतन, ११५; सुलेमान करानी की क्षणिक अधीनता, ११७; मिर्ज़ाओं का द्वितीय विद्रोह, ११८; अतकाखाँ का पंजाब से तबादला, ११९; शिहाबुद्दीन अहमद, खालिसा का दीवान, ११९; रणथम्भौर विजय, १२०; कालिंजर विजय, १२१; सलीम का जन्म, १२२; मुराद का जन्म, १२३; राजस्थान द्वारा अधीनता स्वीकार करना, १२४; पकपाटन में अकबर, १२५; फतेहपुर सीकरी की नींव पड़ना (नवम्बर, १५७१ ई०), १२६।

८. **गुजरात विजय : नवीन प्रशासकीय सुधार** १२८–१५१

आक्रमण के कारण, १२८; अकबर की सावधानी, ११९; दानियाल का जन्म, १३०; सुलेमान करानी की मृत्यु, १३०; सुल्तान मुजफ्फर का आत्मसमर्पण, १३०; अकबर गुजरात का शासक, १३१; अकबर की अहमदाबाद यात्रा, १३२; खम्भात में अकबर, १३२; मिर्ज़ाओं के विरुद्ध अभियान, १३३; सरनाल का युद्ध, १३३; सूरत का घेरा, १३४; आगरा की

अध्याय पृष्ठ

अकस्मात आक्रमण से रक्षा, १३६; पट्टन का युद्ध, १३६; पूर्वी प्रान्तों में अफगान उपद्रव, १३७; मिर्ज़ा शर्फुद्दीन की क़ैद, १३८; अकबर की मद्यगोष्ठी में भभकी, १३८; अकबर का गुजरात से प्रस्थान, १३९; इब्राहीम हुसैन मिर्ज़ा का अन्त, १३९; अकबर का फतहपुर सीकरी लौटना, १४०; मानसिंह का राणा प्रताप के पास असफल दूत कार्य, १४१; बंगाल विजय के लिए मुनीमखाँ का प्रयाण, १४३; गुजरात में विद्रोह १४३; अकबर का विद्युतवेग से अहमदाबाद प्रस्थान, १४४; अहमदाबाद का युद्ध : मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ा की पराजय और मृत्यु, १४५; इख्त्यार-उल-मुल्क की पराजय और मृत्यु, १४७; अकबर का फतहपुर सीकरी लौटना, १४७; गुजरात में नवीन शासन, १४८; भगवन्तदास का राणा प्रताप के पास दूत होकर जाना, १४९; मुजफ्फरखाँ प्रधानमन्त्री, १५० ।

९. **बिहार और बंगाल की विजय : स्फुट अन्य घटनाएँ** १५२–१९२

पटना में दाऊद का घेरा जाना, १५२; अकबर के पुत्रों की सुन्नत, १५३; सलीम का विद्यारम्भ, १५३; रायरामदास नायब दीवान नियुक्त, १५४; फसल की हानि पर क्षतिपूर्ति, १५४; जोधपुर के चन्द्रसेन पर चढ़ाई, १५५; अकबर की बंगाल पर चढ़ाई की तैयारियाँ, १५६; अबुल फज़ल और बदायूँनी का दरबार में आगमन, १५६; अकबर की साम्राज्य-वादी नीति : विश्व राज्य में उसका विश्वास, १५७; अकबर का पटना के लिए प्रस्थान, १५९; हाजीपुर पर अधिकार, १६०; अकबर का व्यक्तिगत युद्ध का प्रस्ताव, १६१; पटना का पतन, १६१; बिहार की शासन-व्यवस्था : अकबर का आगरा लौटना, १६३; तेलियागढ़ी और टाँडा का पतन, १६४; गुजरात में अकाल और प्लेग, १६५; इबादतखाने की स्थापना, १६६; सुधारों का प्रारम्भ, १७१; जागीरों का खालसा में परिवर्तन : करोड़ियों की नियुक्ति, १७२; लेखा-गार की स्थापना, १७४; दाग़-व्यवस्था, १७५; भक्कर पर अधिकार, १७५; बंगाल पर अधिकार : दाऊद का पीछा, १७६; तुकरा का युद्ध (३ मार्च, १५७५ ई०), १७७; मुनीमखाँ की दाऊद से संधि, १७९; गौरघाट पर अफगान आक्रमण, १८०; बिहार में अफगान विद्रोह का दमन, १८०;

अध्याय पृष्ठ

बेगमों की मक्का यात्रा, १८१; हाजियों के वार्षिक कारवें भेजना, १८२; दरबारी सेनाओं का विवरण, १८३; प्रशासकीय सुधारों का विरोध, अज़ीज़ कोका बन्दी, १८४; बदख्शां के सुलेमान का आगमन, १८५; टोडरमल मशरिफे-दीवान नियुक्त, १८६; मुनीमखाँ की मृत्यु, बंगाल और बिहार का निकल जाना, १८७; खानेजहाँ का बंगाल प्रस्थान, १८८; राजमहल का युद्ध, १८९; रोहतासगढ़ और शेरगढ़ पर अधिकार, १९१ ।

१०. **अकबर और राणा प्रताप** १९३–२१९

प्रताप एक महान विरोधी के रूप में, १९३; प्रताप का प्रारम्भिक जीवन : मुगलों का मेवाड़ पर दबाव, १९४; मेवाड़ समस्या सुलझाने के अकबर के प्रयत्न, १९५; मानसिंह को प्रताप के विरुद्ध भेजा जाना, १९७; राणा की सुरक्षा व्यवस्था, १९८; प्रताप का मानसिंह के विरुद्ध उतरना, १९९; युद्धस्थल, १९९; हल्दीघाटी का युद्ध (१८ जून, १५७६ ई०), २०२; हल्दीघाटी के युद्ध का परिणाम, २०७; अकबर के प्रताप को अकेला करने के प्रयत्न, २०९; अकबर की गोलकुण्डा यात्रा, २१०; अकबर प्रताप को फँसाने में असफल, २११; राणा के विरुद्ध शाहबाजखाँ का प्रथम अभियान, २१२; कुम्भलगढ़ का पतन, २१३; शाहबाजखाँ के द्वितीय और तृतीय अभियान, २१४; जगन्नाथ कछवाहा का सैनिक अभियान, २१५; राणा की उदारता, २१५; आक्रमणों से मुक्ति : प्रताप की मृत्यु, २१६; प्रताप की सफलता, २१७ ।

११. **अन्तरावलोकन और सुलहकुल की ओर** २२०–२४२

अकबर के जीवन में एक नया मोड़, २२०; शाह मंसूर वजीर, २२०; खानदेश पर विफल सैनिक अभियान, २२१; गुजरात में मुजफ्फर हुसैन मिर्ज़ा के विद्रोह का दमन, २२२; शहज़ादों का मनसबदार नियुक्त होना, २२३; टोडरमल की देवमूर्तियों का खोना, मनोहरनगर की नींव, २२३; एक पुच्छलतारे का उदय, २२४; टकसाली सुधार, २२४; यूरोपीय अद्भुत वस्तुएँ, २२५; खानेजहाँ की सतगाँव पर चढ़ाई, २२५; अब्दुन्नबी का पतन, २२६; अकबर के धार्मिक

अध्याय पृष्ठ

दृष्टिकोणों में क्रान्तिकारी परिवर्तन, २२७; धार्मिक विचार-विमर्शों का पुनः प्रारम्भ, २३०; अकबर का खुतबा पढ़ना, २३४; अभ्रान्ति आज्ञापत्र, २३५; अनुदार मुसलमानों की प्रतिक्रिया, २३८; अकबर का भारतीय सर्वसहनशीलता की नीति अपनाना, २३९; अकबर की अन्तिम अजमेर यात्रा, २४०; काश्मीर के यूसुफखाँ की अकबर से भेंट, २४०; दामन पर एक असफल अभियान, २४१; मक्का से पाषाण अवशेष चिन्ह लाया जाना, २४१; बारह सूबों का निर्माण, २४१; दहसाला बन्दोबस्त, २४२।

१२. **अकबर और पारसी, प्रथम ईसाई और जैन मिशन** २४३–२६२

दस्तूर मेहरजी राना की अकबर से प्रथम भेंट (१५७३ ई०), २४३; मेहरजी सीकरी में : अकबर का पारसी रस्में अपनाना, २४३; बीरबर का सूर्योपासना का समर्थन, २४५; अकबर द्वारा मेहरजी को जागीर प्रदान, २४५; अकबर के दरबार में विदेशी पारसी, २४५; अकबर का ईसाई धर्म से प्रथम सम्पर्क, २४६; अकबर का गोआ से पुर्तगाली मिशनों को आमन्त्रित करना, २४७; मिशन का स्वागत, २४८; ईसाई पादरियों की असहनशीलता, २४८; अकबर का मैत्रीपूर्ण रुख, २४९; मांसरेट का अकबर के साथ काबुल जाना, २५१; विचार विमर्श के विषय, २५१; मिशन की असफलता, २५३; दामन पर मुग़ल आक्रमण, २५५; स्पेन के फिलिप द्वितीय के पास राजदूत भेजने का प्रस्ताव, २५६; जैनधर्म से प्रथम सम्पर्क, २५७; प्रथम स्थायी जैन मिशन, २५७; हीर विजय सूरि फतेहपुर सीकरी में, २५९; दरबार में जैन प्रभाव, २६०; अकबर पर जैन धर्म का प्रभाव, २६१।

१३. **महान विद्रोह (१५८०–८३ ई०)** २६३–२८९

टोडरमल का बिहार भेजा जाना, २६५; बंगाल में विद्रोह, २६५; एक दरबारी षड्यन्त्र का दमन, मुजफ्फरखाँ का बध, २६७; विद्रोहियों द्वारा मिर्ज़ा हकीम सम्राट् घोषित, २६८; टोडरमल का बिहार में घिर जाना, २६९; विद्रोह दमन के लिए अकबर के कार्य, २७०; मासूमखाँ फरनखुदी की पराजय, २७३; इलाहाबाद में नियाबतखाँ का विद्रोह, २७४; मिर्ज़ा हकीम का भारत पर आक्रमण : अकबर का उसके विरुद्ध

अध्याय पृष्ठ

प्रस्थान, २७५; ख्वाजा शाह मंसूर को फाँसी, २७६; मिर्ज़ा हकीम का काबुल लौटना, २७८; मध्ययुगीन भारत में प्रथम जनगणना, २७९; कटेहर का विद्रोह : अरब बहादुर की पराजय, २७९; अकबर का काबुल की ओर कूँच, २८०; मिर्ज़ा हकीम की पराजय, २८२; अकबर का भारत लौटना, सद्र और नगर काजियों की नियुक्ति, २८३; मासूमखाँ फरनखुदी को क्षमादान, २८४; बहादुर का अन्त, २८५; शाहबाज़खाँ नजरबन्द, २८५; हाजीबेगम की मृत्यु, २८५; बंगाल और बिहार में विद्रोहियों का मूलोच्छेदन, २८६; अकबर की सफलता, धर्म-निरपेक्षता की विजय, २८८।

१४. **नवयुग का युग; दीनइलाही** २९०–३२२

अकबर का विजयोत्सव, २९०; कुछ महत्त्वपूर्ण सुधार, २९१; टोडरमल प्रधानमन्त्री नियुक्त, २९१; टोडरमल के सुधार, २९२; जाला को मृत्युदण्ड, २९४; फतेहपुर सीकरी के तालाब का फटना, २९५; गूँगामहल, २९५; अकबर की अस्वस्थता, २९६; दीनइलाही क्यों ?, २९६; अकबर की दीनइलाही की खोज, २९७; दीनइलाही कैसे चला ?, २९९; दीक्षा समारोह, ३०१; दीनइलाही के सिद्धान्त, ३०२; दीनइलाही के नियम, ३०२; सदस्यों की वृद्धि करने में दबाव न होना, ३०३; दीनइलाही की विशेषता, ३०३; क्या अकबर ने इस्लाम का दमन किया ?, ३०५; बाजार नियन्त्रण, ३०८; अकबर का बीरबर के घर सत्कार, ३०९; भगवन्त दास पंजाब का सूबेदार, ३०९; फतेहउल्ला शीराज़ी का दरबार आगमन, ३०९; अकबर का एक सती रोकना, ३१०; एतिमादखाँ गुजरात का सूबेदार, ३११; केन्द्रीय शासन का पुनर्संगठन, ३११; गुजरात में एक विद्रोह का दमन, ३१३; अकबर का बीरबर को व्याधिमुक्त करना, ३१६; अकबर की महत्वाकांक्षी विजय योजनाएँ; इलाहाबाद के किले की नींव पड़ना, ३१६; भथा के राजा रामचन्द्र का दरबार में आगमन, ३१७; अकाल का वर्ष, ३१८; इलाही संवत् का प्रचलन, ३१८; दसवन्त चित्रकार की मृत्यु, ३१९; अकबर द्वारा बीरबर की हाथी के आक्रमण से रक्षा, ३१९; कुछ प्रमुख लोगों की मृत्यु, ३२०; बीरबर का सम्मान, ३२०;

CamScanner

अध्याय पृष्ठ

शाहजादा सलीम का विवाह, ३२०; नौरोज (१५८५ ई०) के सम्मान, ३२२; प्रचुर फसलें और मालगुजारी में कमी, ३२२।

१५. **वैज्ञानिक सीमाप्राग्त की खोज; सरहदी जातियों का दमन और काश्मीर, बलूचिस्तान, सिन्ध तथा कन्धार की विजय** ३२३–३६१

अब्दुल्लाखाँ उज़बेक का बदख्शां पर अधिकार, ३२३; शाहरुख का मुग़ल दरबार में आगमन, ३२३; प्रथम अंग्रेज व्यापार मिशन, ३२४; अकबर का काबुल की ओर कूँच, ३२६; काश्मीर के शासक का दरबार में बुलाया जाना, ३२७; मानसिंह का हकीम के पुत्रों को लाना, ३२७; काश्मीर, स्वात बाजौर और बलूचिस्तान विजय के लिए सेनाएँ भेजना, ३२८; मानसिंह काबुल का सूबेदार; रौशनियाओं की पराजय, ३२९; स्वात और बाजौर पर चढ़ाई, ३३१; अकबर को शोक, ३३३; बीरबर का चरित्र, ३३४; यूसुफजाइयों के विरुद्ध द्वितीय अभियान, ३३५; तूरान से राजदूत का आगमन, ३३६; सरहद में फिर हलचल : दमन के प्रयत्न, ३३७; मानसिंह का बिहार तबादला, ३४१; काश्मीर विजय, ३४२; तिब्बत द्वारा मुगल आधिपत्य स्वीकार करना, ३४५; बलूचिस्तान की अधीनता, ३४६; दक्षिण पर एक सैनिक अभियान, ३४६; अकबर लाहौर में; कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, ३४८; सरहिन्द और उज्जैन में विध्वंसकारी बाढ़ें, ३४९; थट्टा से राजदूत : राजा बासु की अधीनता, ३५०; प्रान्तीय शासन का पुनर्संगठन, ३५०; खुसरू का जन्म और कुछ अन्य घटनाएँ, ३५१; तानसेन की मृत्यु, ३५१; अकबर की प्रथम काश्मीर यात्रा, ३५३; टोडरमल की मृत्यु, ३५५; भगवन्तदास की मृत्यु, ३५६; सिन्ध विजय, ३५७; कन्धार पर अधिकार, ३५९; सीबी की विजय, ३६०; ईरान से राजदूत, ३६१।

१६. **बिहार में मानसिंह; उड़ीसा, जूनागढ़ और सौराष्ट्र विजय** ३६२–३७५

बिहार में मानसिंह का शासन, ३६२; मुगल विजय के पूर्व उड़ीसा, ३६३; मानसिंह का उड़ीसा अभियान, ३६३; नासिर से सन्धि, ३६४, नासिर द्वारा संधि भंग; उड़ीसा की विजय, ३६५; उड़ीसा के जमींदारों का दमन, ३६६; अकबर नगर की नींव पड़ना, ३६७; मानसिंह का बुस्ना पर पुनः

अध्याय पृष्ठ

अधिकार, विद्रोहियों की पराजय, ३६७; कूचबिहार की अधीनता, ३६८; दुर्जनसिंह की मृत्यु, ३६८; मासूम काबुली और ईसा का अन्त, बंगाल में शान्ति, ३६९; पूर्वी बंगाल की विजय; ढाका, मानसिंह का मुख्य केन्द्र, ३६९; जूनागढ़, सौराष्ट्र और द्वारका की विजय, ३७१; फिर भी उपद्रवों से मुक्ति नहीं, ३७२; भथा में विद्रोह, ३७३; कुछ अन्य विद्रोह, ३७५।

१७. **नवीन सामाजिक व्यवस्था की स्थापना; अन्तिम ईसाई और जैन मिशन** ३७६–४०६

अकबर का एक नवीन राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना, ३७६; सामाजिक सुधार की आवश्यकता, ३७७; सामाजिक सुधार, ३७७; द्वितीय ईसाई मिशन, ३८०; हीरविजय सूरि के शिष्य दरबार में, ३८२; द्वितीय जैनमिशन, ३८३; प्रान्तों के चार मण्डलों में विभाजन, ३८५; अकबर की दूसरी काश्मीर यात्रा, ३८५; अज़ीज़ कोका का मक्का भागना, ३८६; शेख मुबारक की मृत्यु, ३८७; तृतीय जैन मिशन, ३८७; जैन धर्म का अकबर के जीवन पर स्थायी प्रभाव, ३८९; तृतीय ईसाई मिशन; अकबर का आमन्त्रण, ३९१; मिशन के सदस्य, ३९१; लाहौर की यात्रा, ३९३; फैज़ी की मृत्यु, ३९३; हकीम हुमाम की मृत्यु, ३९४; अकबर की पादरियों के प्रति उदारता, ३९४, पादरियों की गलतफहमी, ३९५; लाहौर में मिशनरी कार्य की प्रगति, ३९६; अकबर की तृतीय काश्मीर यात्रा, पादरियों का अकाल पीड़ित बच्चों का बप्तिस्मा देना, ३९९; पादरियों का अधैर्य, ४००; दक्षिण में, ४०१; अकबर का गोआ को राजदूत मण्डल भेजना, ४०२; जेसुइट पादरी आगरे में, अकबर का गिरजाघर बनवाना, ४०२; जेसुइटों द्वारा मिल्डेन हाल का विरोध, ४०४; ईसाई मिशनों के परिणाम, ४०५।

१८. **दक्षिण भारत** ४०७–४४६

उत्तर और दक्षिण भारत की सांस्कृतिक एकता, ४०७; अकबर की दक्षिण पर प्रारम्भिक योजनाएँ, ४०८; खानदेश से प्रथम सम्पर्क, ४०९; खानदेश की अधीनता स्वीकार करना, ४१०; अहमदनगर के विरुद्ध प्रथम असफल प्रयत्न, ४११;

अध्याय पृष्ठ

अहमदनगर का द्वितीय असफल अभियान, ४१२; बुरहानुद्दीन की अहमदनगर में सफलता, ४१३; बुरहानुद्दीन द्वारा अकबर की अधीनता अस्वीकार, दक्षिण में मुगल राजदूत, ४१४; दक्षिण के विरुद्ध अकबर के प्रारम्भिक कार्य, ४१४; मुग़ल आक्रमण के समय अहमदनगर, ४१५; राजा अलीखाँ मुगलों के साथ, ४१६; मुराद का दक्षिण की ओर कूँच, ४१७; अहमदनगर का प्रथम घेरा, ४१८; चाँदबीबी का मुकाबला, ४१९; घेरा उठाया जाना, ४२१; चाँद सुल्ताना का अपनी स्थिति सुदृढ़ करना, ४२२; विरोध का पुनः आरम्भ, ४२२; बीजापुर और गोलकुण्डा का मुग़लों के विरुद्ध अहमदनगर का साथ देना, ४२३; मुराद का दरबार बुलाया जाना, ४२४; तूरान विजय की योजना का परित्याग, ४२५; अकबर का आगरे लौटना, ४२५; दक्षिण अभियान की प्रगति, ४२६; अबुल फज़ल का दक्षिण में आगमन, ४२६; मुराद की मृत्यु, ४२७; दक्षिण में अबुल फज़ल का कार्य, ४२८; दक्षिण में दानियाल की नियुक्ति; मध्यान्तर में अबुल फज़ल का कार्य, ४२८; अकबर का दक्षिण प्रस्थान, ४२९; चाँद बीबी की अबुल फजल से सन्धिवार्ता, ४३०; बरार पर मुगलों का पुनः अधिकार, ४३१; दानियाल का अहमदनगर आगमन, ४३१; नासिक की विजय, ४३२; नासिक का निकल जाना, ४३२; अहमदनगर का पतन, ४३२; अकबर का बुरहानपुर प्रस्थान, ४३४; असीरगढ़ का घेरा डालने के अकबर के आदेश, ४३५; असीरगढ़ का वर्णन, ४३६; असीरगढ़ का घेरा, ४३७; सापाँ और मालीगढ़ पर अधिकार, ४३७; बहादुर का आत्मसमर्पण, ४३९; बहादुर ने आत्मसमर्पण क्यों किया, असीरगढ़ का पतन, ४३९; क्या अबुल फज़ल ने तथ्यों में हेरफेर किया ?; समकालीन प्रमाणों का एक विश्लेषण, ४४१; दानियाल मुगल दक्षिण का सूबेदार नियुक्त, ४४५; अकबर का आगरे लौटना, ४४६ ।

१९. **शाहजादा सलीम का विद्रोह और अकबर के अन्तिम दिन** ४४७–४७९

सलीम प्रिय पुत्र और उत्तराधिकारी, ४४७; सलीम के प्रारम्भिक विद्रोही कार्य, ४४८; सलीम और अकबर के बीच मनमुटाव, ४४९; सलीम अबुल फजल के विरुद्ध, ४५०;

अध्याय पृष्ठ

सलीम की अकबर के प्रति अवज्ञा, ४५१; सलीम के विद्रोह के कारण, ४५१; सलीम की मेवाड़ पर अनिच्छापूर्ण चढ़ाई, ४५३; सलीम का खुला विद्रोह; आगरे पर अधिकार करने का असफल प्रयत्न, ४५४; अकबर का सलीम को समझाने का प्रयत्न, ४५५; सलीम का राजधानी पर अधिकार करने का दूसरा असफल प्रयत्न, ४५६; सलीम सुल्तान के रूप में ४५६; अबुल फजल का वध, ४५७; अबुल फजल का एक मूल्यांकन, ४५८; अकबर का शोक, ४६०; बीरसिंहदेव के विरुद्ध चढ़ाई, ४६०; अकबर और सलीम के बीच समाधान, ४६१; सलीम को पुनः मेवाड़ भेजना, ४६३; सरायों में निःशुल्क विश्राम और भोजन, ४६३; मानबाई की आत्महत्या, ४६४; सलीम का द्वितीय विद्रोह, ४६५; अकबर का सलीम के विरुद्ध विफल अभियान, ४६६; मरियम मकानी, ४६७; सलीम की अन्तिम क्षमायाचना; उसकी क़ैद और मुक्ति, ४६८; तूरान की चढ़ाई की अन्तिम योजना, ४६९; किश्तावर और मारू पर चढ़ाई, ४७०; दानियाल की मृत्यु, ४७०; राज्यकाल का अन्तिम वर्ष, ४७३; अकबर की अस्वस्थता, ४७३; अकबर का बीमार पड़ना, ४७४; अकबर को अधिकारच्युत करने का षड्यन्त्र, ४७५; षड्यन्त्र की असफलता, ४७६; दरबार द्वारा सलीम का समर्थन, ४७७; अकबर की मृत्यु, ४७८ ।

२०. **व्यक्तित्व और चरित्र** ४८०–५१९

व्यक्तित्व, ४ ०; शभूषा, ४८१; आचार व्यवहार, ४८२; खानपान, ४८३; खेल, शिकार इत्यादि, ४८४; साक्षरता, ४८६; विद्याप्रेमी, ४८८; यन्त्र और शिल्पकला प्रेमी, ४८९; पारिवारिक जीवन, ४८९; सहृदय मित्र, ४९१; प्रजावत्सल, ४९३; धार्मिक विचार, ४९३; धर्मानुरागी, ४९५; अकबर का मुसलमान न रहना, ४९७; बुद्धिवादी लेकिन फिर भी अन्धविश्वासी, ४९९; सैनिक और सेनापति, ५०१; राजनीतिज्ञ के रूप में, ५०४; शासक के रूप में, ५०५; अकबर की न्यायप्रियता, ५०८; नीतिज्ञ, ५०९; इतिहास में स्थान, ५१८ ।

ग्रन्थ सूची ५२१–५३२

अनुक्रमणिका ५३३–५७६